

रविवार 3 मार्च, 2019

विषय — ईसा मसीह

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 14: 6

“मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।”

उत्तरदायी अध्ययन: II कुरिन्थियों 4: 1-6

- 1 इसलिये जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते।
- 2 परन्तु हम ने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के साम्हने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।
- 3 परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होने वालों ही के लिये पड़ा है।
- 4 और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।
- 5 क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।
- 6 इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड किरिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एडडी ने किरिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. मत्ती 1: 23

23 कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है “परमेश्वर हमारे साथ” ।

2. लूका 4: 14, 16-18, 21

14 फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई ।

16 और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ ।

17 यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था ।

18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुआं को छुड़ाऊं ।

21 तब वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है ।

3. मरकुस 8: 11-13 (सं), 14 (सं), 15-17 (सं 2), 18-21

11 फिर फरीसी निकलकर उस से वाद-विवाद करने लगे, और उसे जांचने के लिये उस से कोई स्वर्गीय चिन्ह मांगा ।

12 उस ने अपनी आत्मा में आह मार कर कहा, इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढते हैं? मैं तुम से सच कहता हूं, कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा ।

13 और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया और पार चला गया ॥

14 और वे रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उन के पास एक ही रोटी थी ।

15 और उस ने उन्हें चिताया, कि देखो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस रहो ।

16 वे आपस में विचार करके कहने लगे, कि हमारे पास तो रोटी नहीं है ।

17 यह जानकर यीशु ने उन से कहा; तुम क्यों आपस में यह विचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते और नहीं समझते?

18 क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है? क्या आंखे रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते? और तुम्हें स्मरण नहीं ।

19 कि जब मैं ने पांच हजार के लिये पांच रोटी तोड़ी थीं तो तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकियां भरकर उठाई? उन्होंने उस से कहा, बारह टोकियां ।

- 20 और जब चार हज़ार के लिये सात रोटी थीं तो तुमने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर उठाए थे? उन्होंने उससे कहा, सात टोकरे।
21 उस ने उन से कहा, क्या तुम अब तक नहीं समझते?

4. लूका 18: 1-8

- 1 फिर उस ने इस के विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा।
2 कि किसी नगर में एक न्यायी रहता था; जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था।
3 और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, कि मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा।
4 उस ने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में विचारकर कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूँ।
5 तौभी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय चुकाऊंगा कहीं ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी आकर अन्त को मेरा नाक में दम करे।
6 प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है?
7 सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुएों का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उस की दुहाई देते रहते; और क्या वह उन के विषय में देर करेगा?
8 मैं तुम से कहता हूँ; वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

5. लूका 7: 1-10

- 1 जब वह लोगों को अपनी सारी बातें सुना चुका, तो कफरनहूम में आया।
2 और किसी सूबेदार का एक दास जो उसका पिरय था, बीमारी से मरने पर था।
3 उस ने यीशु की चर्चा सुनकर यहूदियों के कई पुरनियों को उस से यह बिनती करने को उसके पास भेजा, कि आकर मेरे दास को चंगा कर।
4 वे यीशु के पास आकर उस से बड़ी बिनती करके कहने लगे, कि वह इस योग्य है, कि तू उसके लिये यह करे।
5 क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय को बनाया है।
6 यीशु उन के साथ साथ चला, पर जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा, कि हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए।
7 इसी कारण मैं ने अपने आप को इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊँ, पर वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
8 मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ; और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक को कहता हूँ, जा, तो वह जाता है, और दूसरे से कहता हूँ कि आ, तो आता है; और अपने किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे करता है।
9 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और उस ने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, मैं तुम से कहता हूँ, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
10 और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर, उस दास को चंगा पाया॥

6. मत्ती 16: 13-17, 19, 24, 27

- 13 यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?
14 उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।
15 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
17 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
19 मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।
24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

7. मत्ती 5: 16

- 16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 180: 25-30

जब मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित होता है, सभी चीजों को समझने वाला वर्तमान मन मनुष्य जानता है कि भगवान के साथ सभी चीजें संभव हैं। इस जीवित सत्य का एकमात्र तरीका, जो बीमारों को चंगा करता है, ईश्वरीय मन के विज्ञान में पाया जाता है जैसा कि मसीह यीशु ने सिखाया और प्रदर्शित किया है।

2. XI: 9-16 (से 2nd,)

किरिचियन साइंस के फिजिकल हीलिंग अब परिणाम है, यीशु के समय के अनुसार, ईश्वरीय सिद्धांत के संचालन से, इससे पहले कि पाप और बीमारी मानवीय चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और स्वाभाविक रूप से गायब हो जाते हैं और आवश्यक रूप से अंधेरा प्रकाश और पाप को सुधार के लिए जगह देता है। अब, अतीत की तरह, ये शक्तिशाली कार्य अलौकिक नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च प्राकृतिक हैं। वे इमैनुअल, या "भगवान हमारे साथ है," का संकेत हैं

3. 332: 9 (Christ)-15

मसीह सच्चा विचार है जो अच्छा लगता है, ईश्वर द्वारा मानव चेतना को बोलने वाले पुरुषों के लिए दिव्य संदेश। मसीह, आध्यात्मिक है, — हाँ, दिव्य छवि और समानता, इंद्रियों के भ्रम को दूर करना; मार्ग, सत्य और जीवन, बीमारों को चंगा करना और शैतानों को बाहर निकालना, पाप और बीमारी को नष्ट करना

4. 473: 12-13 (से 2nd,)

यीशु उस व्यक्ति का नाम है जिसने अन्य सभी पुरुषों से अधिक मसीह को प्रस्तुत किया है,

5. 51: 19-21

उनका घाघ उदाहरण हम सभी के उद्धार के लिए था, लेकिन केवल उन कार्यों को करने के माध्यम से जो उन्होंने किए और दूसरों को करना सिखाया।

6. 38: 26-32

पाप और स्वयं के विश्वास में दबे हुए लोगों को, उन लोगों के लिए जो केवल आनंद या इंद्रियों के संतुष्टि के लिए जी रहे हैं, पदार्थ में उसने कहा: आंखे रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं। उन्होंने सिखाया कि भौतिक इंद्रियाँ सत्य और उसकी उपचार शक्ति को बंद कर देती हैं।

7. 33: 18-26

जब उसमें मानवीय तत्व परमात्मा से संघर्ष करता है, तो हमारे महान शिक्षक ने कहा: “मेरी नहीं लेकिन तेरी ही इच्छा पूरी हो।” — अर्थात्, मांस को नहीं, परन्तु आत्मा को मुझमें दर्शाया जाए यह आध्यात्मिक प्रेम की नई समझ है। यह मसीह, या सत्य के लिए सभी देता है। यह अपने दुश्मनों को आशीर्वाद देता है, बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को मिटाता है, अतिचारों और पापों से मृतकों को उठाता है, और हृदय में नम्र गरीबों को सुसमाचार सुनाता है।

8. 135: 26-14

जैसा कि जीसस ने सिखाया था कि ईसाई धर्म पंथ नहीं था, न ही कोई समारोह, और न ही कर्मकांडी यहोवा की ओर से कोई विशेष भेंट; लेकिन यह दिव्य प्रेम का प्रदर्शन था जिसमें त्रुटि करना और बीमारों को ठीक करना, न केवल मसीह, या सत्य के नाम पर, लेकिन सत्य के प्रदर्शन में, जैसा कि दिव्य प्रकाश के चक्रों में होना चाहिए।

यीशु ने अपने चर्च की स्थापना की और मसीह-उपचार की आध्यात्मिक नींव पर अपने मिशन को बनाए रखा। उन्होंने अपने अनुयायियों को सिखाया कि उनके धर्म में एक दिव्य सिद्धांत है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमार और पापी दोनों को ठीक करता है। उन्होंने दावा किया कि कोई भी खुफिया, कार्रवाई, और न ही जीवन भगवान से अलग है। अपने ऊपर आए उत्पीड़न के बावजूद, उसने शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से पुरुषों को बचाने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का इस्तेमाल किया।

सवाल तो अब जैसा था, यीशु ने बीमारों को कैसे ठीक किया? उनके इस सवाल का जवाब दुनिया ने खारिज कर दिया। उन्होंने अपने छात्रों से पूछा: “लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?” अर्थ: कौन है या वह क्या है जो इस प्रकार बुराइयों को निकालता है और बीमारों को ठीक करता है?

9. 137: 16 (साइमन)-25

... साइमन ने अपने भाइयों के लिए जवाब दिया, और उसके जवाब ने एक महान तथ्य को सामने रखा: “कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।” मतलब: मसीहा वही है जिसे तुमने घोषित किया था, — मसीह, परमेश्वर की आत्मा, सत्य, जीवन और प्रेम की भावना, जो मानसिक रूप से ठीक करती है। इस दावे से यीशु के प्रति समर्पण का आभास हुआ, “हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।” मतलब, प्रेम ने तुम्हें जीवन का मार्ग दिखाया है!

10. 560: 30-4

ईश्वरीय विचार की अज्ञानता एक बार विचार के ईश्वरीय सिद्धांत की अधिक अज्ञानता पर विश्वास करती है — सत्य और प्रेम की अज्ञानता। सत्य और प्रेम की समझ, सिद्धांत जो शाश्वत भलाई के सिरों पर काम करता है और बुराई में विश्वास और बुराई के अभ्यास दोनों को नष्ट कर देता है, दिव्य विचार की ओर जाता है।

11. 138: 9-11, 17-22

इस आध्यात्मिक रूप से वैज्ञानिक आधार पर यीशु ने अपने इलाज के बारे में बताया, जो बाहरी लोगों के लिए चमत्कारी था।

यीशु ने ईसाई युग में सभी ईसाई धर्म, धर्मशास्त्र और चिकित्सा के लिए मिसाल कायम की। ईसाई अब सीधे आदेशों के तहत हैं, जैसा कि वे तब थे, जैसे मसीह होना, मसीह-आत्मा के अधिकारी होना, मसीह-उदाहरण का पालन करना, और बीमारों के साथ-साथ पाप को ठीक करना।

12. 132: 20-27

आज, अतीत की तरह, आध्यात्मिक विचार की पुनरावृत्ति की अनभिज्ञता, अंध विश्वास उस पर दरवाजा बंद कर देता है, और अगर यह किसी भी सामग्री और एक सिद्धांत पर गढ़ा जाता है तो यह बीमार और पापियों के इलाज की निंदा करता है। आदर्शवाद की इस अस्वीकृति को दर्शाते हुए, परमेश्वर के सच्चे विचार — शारीरिक और मानसिक सभी त्रुटि से मुक्ति — जीसस ने पूछा, “मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?”

13. 37: 16-17

कब यीशु के अनुयायी उसके सभी तरीकों से उसका अनुकरण करना सीखेंगे और अपने शक्तिशाली कार्यों का अनुकरण करेंगे?

14. 55: 22-26

दिव्य चिकित्सा के पुनः प्रकट होने का समय हर समय है; और जो कोई भी दिव्य विज्ञान की वेदी पर अपने सांसारिक स्तर को रखता है, वह अब मसीह का प्याला पीता है, और ईसाई उपचार की भावना और शक्ति से संपन्न है।

15. 34: 13 (सब), 14 (विल)-17

यदि सभी... क़रूस को उठाएंगे, बीमारों को चंगा करेंगे, बुराइयों को बाहर निकालेंगे और गरीबों को मसीह, या सत्य का उपदेश देंगे, तो वे सहस्राब्दी में लाएंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक किरिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6